अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

''बल्लभ डोभाल के कथा साहित्य में अभिव्यक्त लोक विश्वास एवं परंपराओं का विवरण''

आनन्द सिंह
शोधार्थी हिन्दी
राधे हरि राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय काशीपुर उधम सिंह नगर

शोध सार– प्रस्तुत शोध पत्र में बल्लभ डोभाल के कथा साहित्य में लोक विश्वास एवं परंपराओं का विवेचन किया गया है। कथाकार बल्लभ डोभाल के साहित्य में लोक विश्वासों एवं परंपराओं का विभिन्न स्थानों पर वर्णन मिलता है। उतराखण्ड देवभूमि है। यहाँ के कण–कण में देवी–देवताओं का वास माना जाता है। पर्वतीय क्षेत्र में प्रत्येक परिवार में स्थानीय देवी देवता एवं कुल देवता होतें हैं। लोक जीवन में इन्हीं देवी देवताओं का आशीर्वाद व्यक्ति के ऊपर बना रहता है ।

गढ़वाल क्षेत्र में विभिन्न परम्पराएं देखने को मिलती है। जिसमें सामूहिक रूप से किसी भोज का आयोजन करना हो ,ग्रामीणों की सुख–समृद्धि के लिए थाती पूजन का आयोजन हो आदि लोक विश्वास एवं परंपराएं बल्लभ डोभाल के साहित्य में उल्लेख मिलता है । गढ़वाल में थाती पूजन की परंपरा सबसे प्राचीन रही है। ग्रामीण इस परंपरा को सम्पन्न करने में अपनी–अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। गाँव के लोग सामूहिक रूप से थाति–पूजन को सफल बनाने के लिए त्याग समर्पण करते हैं। इस अवसर पर सभी देवी–देवता, ग्राम देवता एवं कुल देवता की पालगी का स्वागत किया जाता है। मुख्य रूप से ग्राम देवता कैलाबीर महाराज, सोलह गाँव सर बडियार के आराध्य कालिया नाग महाराज, सिद्धबाबा कपिलमुनि महाराज और ओणेश्वर महाराज की पालगियों का भव्य स्वागत किया जाता है।

गाँव की सामूहिक बैठक में बरणी में बैठने के लिए कुछ गणमान्य लोगों को चुना जाता है। जिनका कार्य केवल यज्ञ–अनुष्ठान को सफल बनाना होता है। गाँव की सुख, समृद्धि एवं खुशहाली के लिए यज्ञ एवं अनुष्ठान किया जाता है। जिसे विधि विधान पूर्वक सम्पन किया जाता है। इस यज्ञ की अवधि सात दिन या नौ दिन होती है। रात्रि के समय सभी ग्रामवासी ताँदी नृत्य, लोक गीत आदि का गायन करते हैं। यज्ञ के अन्तिम दिवस पर सभी क्षेत्रवासी आस–पास के गाँवों से हजारों की संख्या में श्रद्धालु आकर इस यज्ञ के दर्शन करते हैं। दोपहर में मातरी पूजन का भव्य एवं दिव्य आयोजन किया जाता है। मातरी पूजन का कार्यक्रम

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

क्षणिक अर्थात पाँच से दस मिनट का होता है। जो बहुत ही आकर्षक होता है। ऐसी मान्यता है कि जो श्रद्धालु इस मातरी पूजन के साक्षी बनते हैं उनकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है। मातरी पूजन के पश्चात सैकड़ों देवी–देवता एक साथ झूलते हैं।

इस अनुष्ठान की एक और मुख्य विशेषता यह है कि सभी ग्रामवासी अपने–अपने घर से डाली–माटी लेकर आते हैं। कार्यक्रम के अन्तिम रात्रि को काल रात्रि कहते हैं। रात के समय दिगबन्धन होता है। देवी–देवता की डोलियां और पश्वा गण आदि द्वारा सूतबन्धन का कार्य किया जाता है। इसके पीछे मान्यता है कि गाँव की सभी प्रेत आत्माएं सूतबन्धन के पश्चात गाँव के बाहर चली जाती है।

एक और अन्य परंपरा के अनुसार गाँव में सामूहिक रूप से पाण्डव नृत्य किया जाता है। जिसे सराद्ध कहते हैं। गाँव की सुख, समृद्धि और शान्ति के लिए इस प्रकार के देवीय अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है।

डोभाल जी कहते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में जाने पर प्रायः यह देखा गया है कि नदी–नाले, पर्वतों पर कोई न कोई मन्दिर अवश्य बना होगा। सभी देवी–देवताओं की पूजा पद्धति एक समान न होकर अलग–अलग है। पहाड़ का प्रत्येक व्यक्ति अपने कुल देवता व स्थान देवता पर अटूट आस्था रखते हैं। इन देवी–देवताओं से सम्बन्धित कथा कोई न कोई अवश्य होगी। डोभाल जी के कथा साहित्य में देवी–देवताओं, लोक विश्वासों एवं परंपराओं का वर्णन स्थान–स्थान पर मिलता है। 'तुम्हारी छाँव' कहानी में लेखक बल्लभ डोभाल ने उत्तराखण्ड के विश्व प्रसिद्ध चारों धामों वर्णन किया है। साथ ही उनकी प्रमुख विशेषताओं का भी उल्लेख किया है। –''बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे प्रमुख दिव्य स्थलों जिनकी ऊँचाई लगभग तेरह से चौदह हजार फीट है। यात्रीगण जून के महीने में भी धूप लेने के लिए घर से बाहर निकलते हैं।''

डोभाल जी कहते हैं कि बद्रीनाथ सबसे प्राचीन मन्दिर है। जिसमें भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। विष्णु हिन्दुओं के आराध्य देव हैं।

उत्तराखण्ड के उच्च स्थलों, पर्वत शिखरों एवं घाटियों पर किसी न किसी देवता का मन्दिर है। इन सभी पर्वत शिखरों को भी देवताओं की भाँति पूजा जाता है। यहाँ के सम्पूर्ण जन मानस हिमालय पर्वत को भगवान शिव की तपोस्थली मानते हैं। यात्रा के दौरान पड़ने वाले विभिन्न पड़ावों का वर्णन लेखक ने अपनी कहानी में किया है। लेखक के अनुसार –

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

''अब मेरी निगाहों में बद्रीनाथ की पहाड़ियाँ बर्फ सें ढकी हुई है और तैर रही है। दोनों और पहरेदार की भाँति नर और नारायण पर्वत खड़े हैं। ग्यारह हजार से अधिक ऊँचाई होने पर बद्रीनाथ की सभी पहाड़ियाँ बर्फ से ढकी हुई है। सामने हरे–भरे घास का मैदान । अलकनंदा नदी की कल–कल ध्वनि बड़ी सुरम्य लगती है।''

'मृत्यु कलाप' कहानी में असर्फी भी चार धाम की यात्रा करना चाहती है। साथ ही वैष्णो माता मन्दिर भी जाना चाहती है। वह अपने पति से कहती है कि चार धाम यात्रा करने से जीवन धन्य हो जाता है। निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। वैष्णो माता मन्दिर जाने से घर के सभी जन पुण्य के भागीदार होते हैं। और सभी की मनोकामना पूर्ण होती है। 'रोगमुक्ति' कहानी में लेखक ने लोक विश्वास के महत्व को दर्शाया है। वे कहते हैं कि नेता गण, मंत्री लोग भी समाज में प्रचलित लोक विश्वासों को आत्मसात करते हैं। विपति के समय सभी लोग अपने इष्ट और कुल देवता को स्मरण करते हैं। डोभाल जी कहते हैं कि पहाड़ में जो लोग अल्पायु में काल कवलित हो जाते हैं, वे मृत्यु के बाद पितृ देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

डोभाल जी का मानना है कि इन्हीं पितृ देवताओं को प्रसन्न करने के लिए लोग अपने सामर्थ्य अनुसार तीन से चार दिन का जागर लगाया जाता है। जिसमें सभी स्थानीय देवताओं, कुल देवता एवं पितृ देवता का आहवान किया जाता है। पितृ देवता परिवार के किसी सदस्य पर अवतरित होता है और सुख समृद्धि का आशीर्वाद देकर विदा लेते हैं। इस अवसर पर परिवार के सभी लोग एकत्रित होते हैं। परिवार के जो सदस्य नौकरी हेतु शहर गए होते हैं। उन्हें भी इस देव कार्य के लिए घर आना पड़ता है।

घर परिवार में जब किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब होता है और डॉक्टरों के पास ले जाकर ठीक नहीं होता है तो घर का मुखिया उक्त व्यक्ति की जन्म कुंडली ब्राहमण के पास ले जाता है। और ब्राहमण को कुण्डली दिखाई जाती है। कुण्डली देखने के पश्चात पण्डित जी के द्वारा दोष आदि बताया जाता है। जिसका निवारण करने के बाद व्यक्ति ठीक हो जाता है।

डोभाल जी कहते हैं कि यदि इससे भी कोई व्यक्ति स्वस्थ नहीं होता है तो वह कुल देवता के पश्वा के पास जाता है और उसे झूलाने से पूर्व विनती करते हैं–''हे कृपानिधान ! तू अनादि है। तेरी महिमा की कोई सीमा नहीं है। हम दीन दुखियों का तू ही एकमात्र सहारा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

है। तेरी कृपा से विष भी अमृत बन जाता है। हे कुलदेवता ! रात–दिन तेरी ही पूजा करते हैं। तू देख रहा है कि हमारी मनोस्थिति ठीक नहीं है, घर–परिवार में सब अमंगल चल रहा है। मैंने तुम से कुछ छिपा भी नहीं रखा है। इसलिए हे प्रभु ! हमारे ऊपर अपनी दया दृष्टि बनाए रख और दुख दर्द को समाप्त करने का प्रयास कर।''

'गाँव की खुशबू' नामक कहानी में लेखक बल्ल्लभ डोभाल जी ने ईश्वरीय धारणा एवं आस्था का वर्णन किया है। कहानी का नायक धीरज गणेश मूर्ति का विसर्जन करना चाहता है। वह जब गाँव से विसर्जन के लिए निकलता है तो गणेश की मूर्ति को साथ लाता है। गंगा घाट पहुँचते ही वह सर्वप्रथम स्नान करने लगता है, और गणेश की मूर्ति को गंगा किनारे रख देता है। गंगा में स्नान करने के बाद जब वह बाहर आता है तो वह देखता है कि ''गणेश की मूर्ति पर माथे पर चंदन लगा हुआ है। लोगों में उत्साह का माहौल बना है। गणेश भगवान के चारों और फूल पतियां बिखरे हुए हैं। चढ़ावे के पैसे चारों पड़े हैं। इस दृश्य को देखकर धीरज आश्चर्य चकित हो जाता है।''

उपर्युक्त उद्धरण दर्शाता है कि लोग ईश्वर के प्रति कितने आस्थावान हैं। वे देवी देवताओं के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हैं। और धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। डोभाल जी का मानना है कि व्यक्ति को अच्छे कर्म करते रहने चाहिए। भगवान कर्मों के आधार पर ही फल देते हैं। आप का कर्तव्य है कि आप किसी की भावनाओं को आहत न करें समाज में सभी का सम्मान करें। मानवीयता के आदर्शों का पालन करें। इसके साथ ही डोभाल जी ने उन लोगों का पर्दाफाश किया है जो धर्म के नाम पर लोगों की आस्था से खिलवाड़ करते हैं। ये लोग स्वार्थ के वशीभूत होकर किसी भी हद तक जा सकते हैं। इन्हें सिर्फ अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है। तीर्थ स्थलों पर भी पुजारी गण इस प्रकार के कृत्य करते हैं। जिस कारण लोगों की भावनाएं भी आहत होती है।

डोभाल जी कहते हैं कि कुछ साधु लोग आडंबर का चोला पहने रहते हैं। जो धर्म की आड़ में अनैतिक कार्यों को भी करते हैं। डोभाल जी ने 'अंतर्कथा' उपन्यास में धर्म की आड़ में आडंबर को ओढ़े पंडितो एवं धर्मात्माओं की स्वार्थ सिद्धी को भी उठाया है – ''जजमानों को तीर्थ स्थलों के दर्शन करवा कर दक्षिणा प्राप्त की जाती है। जिससे साल भर का गुजारा बसारा हो सके। यहाँ खेती बाड़ी का काम कम होता जा रहा है। लोगों ने धर्म को ही खेती बाड़ी समझने लगे हैं। यह खेती सभी तीर्थ स्थलों में देखने को मिल रही है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

जहाँ तीर्थ यात्रियों को लूटने का काम किया जा रहा है। यह खेती गंगोत्री से लेकर यमनोत्री, केदारनाथ से लेकर बद्रीनाथ तक विस्तृत है।''

'बस्ती' कहानी में डोभाल जी ने माना है कि व्यक्ति चाहे कहीं भी निवास करे वह अपने भगवान को नहीं भूलता है। वहीं पर उसकी पूजा अर्चना शुरू कर देता है। वह जहाँ–जहाँ पर भी जाता है, वहीं पर अपने धर्म के अनुसार मन्दिर, मस्जिद का निर्माण करता है। 'जय जगदीश हरे' कहानी में लेखक ने इस उक्ति को चरितार्थ किया है कि ''जहाँ चाह वहाँ राह''। कहानी का नायक शंकर आस्थावादी है। वह ईश्वर में अधिक आस्था रखता है। वह शमशान जैसी जगह को भी आबाद कर देता है। जहाँ पर पहले कोई देखने तक नहीं आता था आज वह बस्ती बन चुकी है। आज यहाँ लोगों का तांता लगा रहता है।

शंकर प्रभु से विनती करता है कि हे प्रभु ! तुम तो अंतर्यामी हो। तुम कण–कण , घट–घट में निवास करने वाले हो। तुमसे कोई भी बात छिपी नही रहतीं है। तुम सब जानते हो कौन क्या कर रहा है। तुमने सभी को लोगों अच्छे हो या बुरे को अपनी शरण दे रखी है। क्या मैं यह नहीं जानता कि तुमने कितने पापी लोगों का उद्धार किया है। शंकर की यह विनती दर्शाती है कि व्यक्ति अंत में ईश्वर के चरणों में जाता है। जहाँ से उसे अपने दुख दर्द दूर होने की उम्मीद रहती है। शंकर रामरती को भी समझाता है कि कर्म अच्छे होंगे तो फल भी अच्छा मिलेगा। रामरती की संतान न होने पर वह ईश्वर के शरण में जाती है। अंत में उसे संतान सुख की प्राप्ति हो जाती है।

'अतीत के अक्षर' में लेखक के द्वारा लोक विश्वास के अंश चित्रित किए गए हैं। गाँव के लोगों का मानना है कि बेटियों की शादी अच्छे घर में होनी चाहिए। जहाँ उन्हें किसी भी प्रकार की कोई समस्या न हो। ''वे ऐसी बेटियों को खुशनसीब समझते हैं जिनकी शादी सम्पन घर में होती है। यदि बेटियों को घर बार अच्छा मिल जाता है तो माँ बाप को भी खुशी होती है। किस्मत की बात है कि कभी–कभी गरीब घर की बेटी को भी अच्छा घर मिल जाता है।''

लेखक कहते हैं कि गरीबी और अमीरी सब भाग्य की बात है। दादा जी का मानना है कि जो यह अमीरी और गरीबी होती है यह पूर्वजन्मों का फल है। व्यक्ति अपने पूर्व जन्म जैसे–जैसे कर्म किए हैं वैसे–वैसे फल मिलते गए। इस जन्म में जो मिला है वह पूर्व जन्मों का फल परिणाम है। दादा कहते हैं कि एक व्यक्ति बैठे–बैठे सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 14-Issue 02, (April-June 2026)

वह दुनिया का सबसे अमीर आदमी बन जाता है। किन्तु एक मजदूर व्यक्ति दिन–रात मेहनत करने के बाद भी दो वक्त की रोटी भी बमुश्किल प्राप्त होती है।

निष्कर्षतः बल्लभ डोभाल के कथा साहित्य में लोक विश्वासों एवं परंपराओं का सुन्दर चित्रण हुआ है। लेखक का मानना है कि गढ़वाल के सभी लोग आस्थावादी हैं। वे भगवान के दर्शन के प्राप्त कर स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हैं। उनका मानना है कि हमारे देवी–देवता ही मुसीबतों में काम आते हैं। दूर–दराज से लोग यात्रा करने आते हैं। हमारी सभ्यता और संसति को अपनाने का प्रयास करते हैं। जिस कारण हमारी संस्कृति का प्रचार–प्रसार विश्व स्तर पर होता है।

संदर्भ संकेत –

1 गढ़वाल और गढ़वाल – चन्द्रपाल सिंह
2 अतीत के अक्षर – बल्लभ डोभाल
3 वही एक अंत – बल्लभ डोभाल
4 गढ़वाली लोकगीत एवं सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ0 गोविन्द चातक